Volume II, Issue XIX
July To September 2017
U.G.C. Journal no. 64728

2017-18

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 4.710 (2016)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

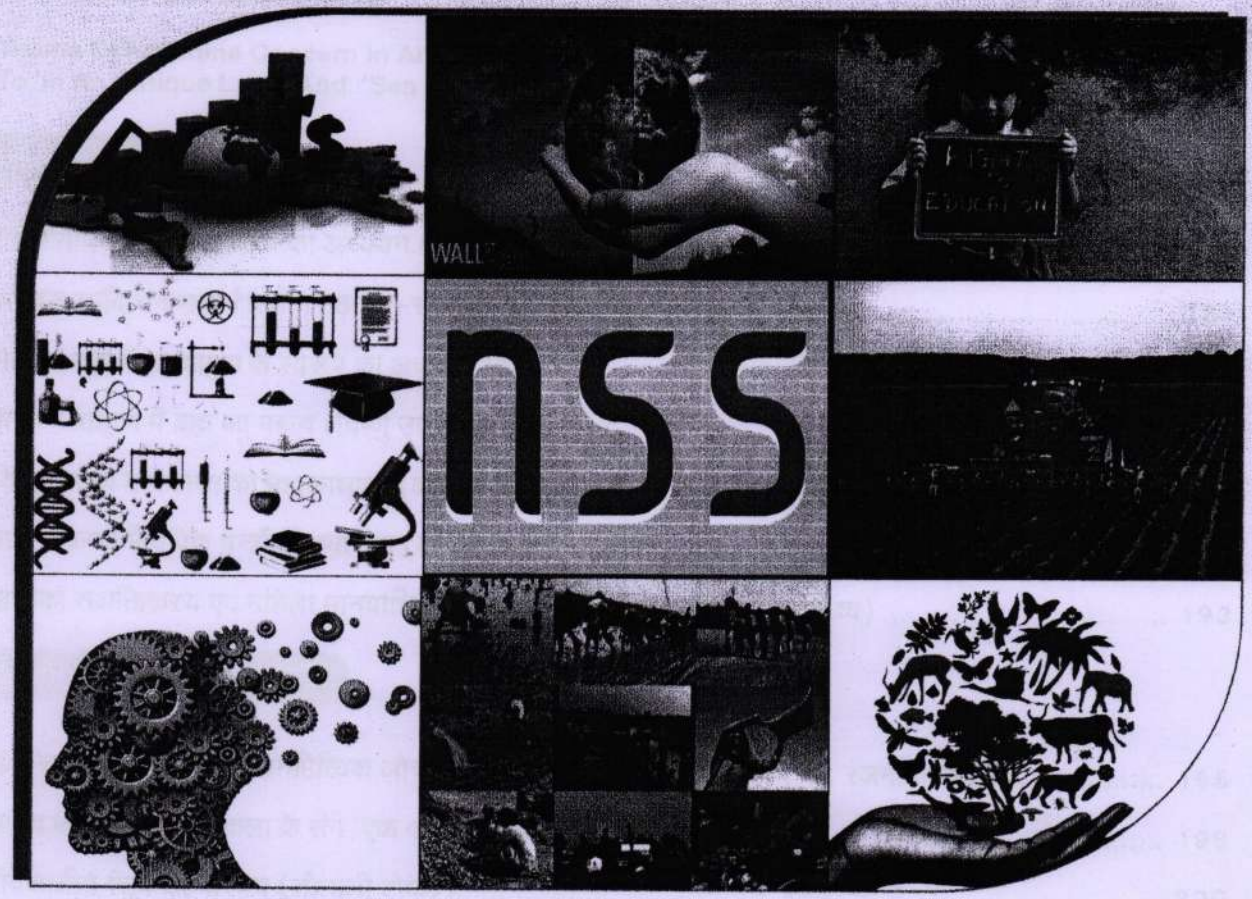

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

58. कबीर के दोहो की वर्तमान उपदेयता (प्रीति बबेले) 169

60. साहित्यिक सांस्कृतिक परिदृश्य में बुन्देलखण्ड (डॉ. अमित शुक्ल) 171

61. नागार्जुन के कथा साहित्य में सर्वहारा के प्रति संवेदना (डॉ. विजयता पंडित) 173

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

62. Theme Of Feminine Concern In Amitav Ghosh's Novels With Special Reference To 'In An Antique Land' And 'Sea Of Poppies' (Dr. Ritu Mittal) 175

(Sanskrit / संस्कृत)

63. तैत्तिरीयोपनिषद में ब्रह्मविद्या का अध्ययन (डॉ. बालकृष्ण प्रजापति) 178

64. जगद्गुरु आदि शंकराचार्य प्रणीत हठयोग-साधना (डॉ. पुनीत कुमार मिश्र) 181

65. भावदेव सूरि के काव्यगुण के स्वरूप का अध्ययन (रश्मि गुप्ता) 184

66. शतपथ ब्राह्मण में ब्रह्म का महत्व (विष्णु उपाध्याय) 186

67. शिशुपालवध महाकाव्य का महाकाव्यत्त्व (अनिल मुवेल) 188

68. ब्राह्मण ग्रन्थों में वैदिक मन्त्रों की व्याख्या (डॉ. बीना कुमारी यादव) 191

69. बालिका सशक्तिकरण एवं महिला मानवाधिकार एक सामान्य परिचय (डॉ. सरिता यादव) 193

(Drawing & Design / चित्रकला)

70. अवन्तिका(उज्जयिनी) की साहित्यिक और शैक्षणिक परम्परा (खुशबू जांगलवा, डॉ. रंजना वानखड़े) 195

71. आनंद के रंग- कोलाज कला के संग 'एक कलात्मक अध्ययन' (डॉ. यतीन्द्र महोबे) 198

72. मौर्यकालीन स्तूप का परिचय (सोनाली टोके) 200

73. प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला (नम्रता उपाध्याय, डॉ. अल्पना उपाध्याय) 202

74. होली दरवाजा का अलंकारिक सौन्दर्य – एक दृश्यात्मक समालोचन (रेखा गुप्ता) 204

(Education / शिक्षा)

75. कोटा संभाग के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की दृश्य श्रव्य सामग्री के प्रति जागरूकता व उपयोगिता का अध्ययन (डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता, शीला तिवारी) 206

76. बी.,चर प्रशिक्षार्णियों की जनसंचार माध्यमों के प्रति जागरूकता एवं शिक्षा पर प्रभाव (महेश चन्द्र शर्मा, डॉ. भंवर लाल नागदा) 209

77. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्तन योग्यता एवं आत्मविश्वास में सम्बन्ध ज्ञात करना (डॉ. स्मिता भवालकर, रेखा चौर्डिया) 212

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 4.710 (2016) July to September 2017, Vol. II

आनंद के रंग- कोलाज कला के संग 'एक कलात्मक अध्ययन'

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना - कला सिर्फ आनंद प्राप्ति का जरिया नहीं है ,बल्कि उसमें जनकल्याण यथार्थता एवं प्रेरणादायक भावना का समावेश भी अनिवार्य है। भारत में पचास प्रतिशत कलाकार ऐसे हैं, जिनकी कलाकृतियाँ कला दीर्घाओं में लगी रहती हैं। जिनमें आड़ी-तिरछी रेखाएं यहाँ वहां फैले रंग के अलावा कुछ भी नहीं होता। आज कुछ कलाकार ऐसे भी है, जो कला को सिर्फ आत्मिक आंनद की प्राप्ति का साधन मानते हैं।ये चित्रकला के आधारभूत नियमों का उलंघन कर ऐसी कलाकृति तैयार करते है, जो सिर्फ स्वान्त: सुखाय है। अत: इस प्रकार की कला जनसामान्य एवं समाज की परवाह किए बगैर निर्मित होती है।

मैंने पिछले कुछ सालों में कोलाज चित्रों की रचना की है। वैसे तो सभी माध्यम में चित्र रचना करना मुझे पसंद है लेकिन कोलाज मेरा प्रिय माध्यम है। कोलाज का जन्म 1908 से 1912 के मध्य यूरोपीय चित्रकार जार्ज ब्राक एवं पाब्लो पिकासो के साथ शुरू हुआ।' कलाकृति में कोलाज का प्रयोग करने का श्रेय ब्राक को ही है। कोलाज पद्धति से उनकी रचनाऐं अधिक भौतिक बन गयी, धनवाद की मन्द रंग संगति में नैसर्गिक चमक आ गयी' ब्राक ने चारकोल के साथ कागज के टुकड़ों का प्रयोग किया हैं और पिकासो ने अपने तैल चित्रों में कोलाज तकनीक का इस्तेमाल करने वाले पहले चित्रकार थे। पिकासो ने 1912से विभिन्न प्रकार के पैटर्न और बनावट के साथ अलग अलग टुकड़ों का इस्तेमाल किया हैं । ब्राक, पाब्लो पिकासो ,हन्ना होच, हेनरी मातिस आदि कलाकारो ने इस पद्धति को लागू किया ।

'यूरोप में घनवादी कलाकारों ने अपनी शैली को नया रूप प्रदान करने के लिए अखबार की कतरनों को कैनवास पर चिपका कर चित्र तैयार किये थे। कई यूरोपीय कलाकारों ने इस पद्धति को अपनाया। कोलाज कला की इस परंपरा को कई कलाकारों ने अपनी कृतियों के सृजन में नवीनता के रूप में अपनाया है।'

कोलाज कला वह विधि हैं, जिसमें चित्र तल के भाग को विभिन्न तरह से रंगीन कागज व अन्य चित्रित टुकड़ों को या वस्तुओं के टुकड़ों को चिपकाकर संयोजित किया जाता है।भारतीय चित्रकला के इतिहास में राजस्थानी चित्रों में भी कोलाज कला की प्रचुरता प्राप्त हैं । वस्त्राभूषणों के चित्रों में भी लोक कला के आयाम काँच के टुकड़ों ,पुष्प,कौडियां को चिपकाया गया है और यही कोलाज का रूप है ।

'हम रोज दर्पण के सामने खडे होकर अपनी छवि देखते हैं । दर्पण को भले ही हम गिरा दें लेकिन वह तो अपनी इच्छा से टूटता है। उसके कितने टुकड़ें हो जाएंगे हम नहीं जानते । जब वह टूट जाता हैं, तब हम ही उस बिखरे हुए दर्पण को फिर से जोडने के लिए व्याकुल हो उठते है - यह व्याकुलता ही कोलाज की जननी है।' मध्यप्रदेश राज्य के जबलपुर निवासी वरिष्ठ चित्रकार श्री अमृत लाल वेगड जी पिछले कई सालों से अपनी कलाकृति में कोलाज विधि का प्रयोग करते आ रहे हैं और कहते है -'1977 से नर्मदा पद यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ और इसी के साथ कोलाज का भी आरंभ हुआ , तब से जल रंग छूट गया और मैं केवल कोलाज ही बना रहा हूँ। कागज मैं इतनी सफाई से काटता हूँ और इतनी सावधानी से चिपकाता हूँ कि मेरे कोलाज ,कोलाज न लगकर चित्र लगते है। मेरे कुछ कोलाज जलरंग की तरह , कुछ तैलरंग की तरह, तो कुछ कलर लीनोकट जैसें है किंतु यह गलत है। व्याकरण की दृष्टि से कोलाज को कोलाज जैसा ही दिखना चाहिए लेकिन क्या करूँ मुझे इसी में मजा आता है। मैं व्याकरण को देखूं या अपने मन की खुशी को।

आधुनिक कलाकारों ने भी इस विधि को अपनाया है। वर्तमान में भी कैनवास पर विभिन्न आकारों के टुकड़ों को चिपकाकर कलाकृति सृजित की जा रही हैं। अपनी कलाकृतियों में नवीनता लाने की कोशिश कलाकार निरंतर कर रहा है।

कोलाज चित्र देखने में बड़े ही सुन्दर और आकर्षक होने के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी कलाकार की जेब गरम रखते है क्यूंकि कोलाज निर्माण में कागज के टुकड़ों का प्रयोग चित्र रचना हेतु किया जाता हैं। कोलाज चित्र का निर्माण करते समय कलाकार को अपने धैर्य का परिचय देना होता है चूकि कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को चिपकाना होता है, जिनमे वक्त बहुत लगता है। मैंने अपनी कलाकृतियों में सिर्फ रंगीन पत्रिकाओं के बारीक टुकड़ों का प्रयोग किया है, मैंने सरलतम विषयों का चयन कर कागज के रंगीन कतरनों से उनमें छाया प्रकाश लाने की कोशिश की है। इन चित्रों को दूर से देखने में ऐसा प्रतीत होता है मानो ये चित्र आइल या पोस्टर से निर्मित किये हो। कोलाज में एक टुकड़े से दुसरे टुकडें के बीच की जगह का प्रभाव ही इसकी मुख्य विशेषता है और ये प्रभाव दर्शकों के दिल को छू लेते है।

आज इस तकनीक पर काम करने वाले कलाकार निरंतर कम होते जा रहे है । आइल और एक्रेलिक माध्यम ने इनका महत्व कम कर दिया है लेकिन कुछ कलाकार हैं, जो इस तकनीक पर काम करते है। वह कागज के अलावा अन्य वस्तुऐं भी प्रयोग में लाते हैं।

कोलाज चित्र रचना करते समय मुझे कुछ अलग ही आंनद की अनुभूति होती हैं । कोलाज माध्यम अपने आप में एक भिन्न तकनीक है जो सौंदर्यात्मक दृष्टि से परिपूर्ण है। लेकिन आज कलाकार इस तकनीक से दूर होता जा रहा है। अब कलादिर्घाओं में कोलाज देखने में नहीं आते। इस गुम होती तकनीक को अपनी कला में प्रयोग कर इसे बचाने का मेरा छोटा सा प्रयास है। मैं अपने कुछ कोलाज चित्र इस लेख के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. चित्रकला के मूल आधार - डॉ. मोहन सिंह मावडी, तक्षशिला प्रकाशन